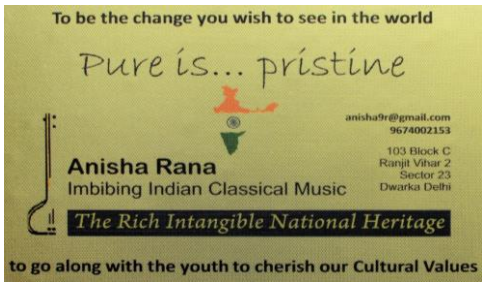

हर देश की शान, उसकी सांस्कृतिक उड़ान
A nation's pride is in its cultural stride

Collegiate: Hindu College, DU

संगीतमय सूरज फिर उगता है.....

अनीशा राणा

(हिन्दू महाविद्ध्यालय, दिल्ली विश्वविद्ध्यालय के बीए (होनौर्स) हिन्दी, की युवा छात्रा "अनीशा राणा" इस शृंखला के जरीए दिवंगत गुरुमाँ विदुषी गिरिजा देवी को हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करते हूए उनके साथ बचपन के अल्प आयू से शास्त्रीय संगीत के गहन विद्ध्या को ग्रहण करने के दौरान उन अमूल्य अरसो को स्मरण कर गुरुशिष्य परंपरा की अहमियत को अग्रसर करने हेतू सुर और शब्द के यादों का संकलन करने का प्रयत्न कर रही है।)

जब 11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन दूर देश स्थित मॉरीशस मे चल रहा होगा, यह एक सौभाग्य की बात ही है, की हम सब की सरस्वती गुरु माँ जो हमें गायन में भाषा के सटीक उपयोग से हमारे संस्कार तथा संस्कृति में सही प्रभाव के महत्वा को समझाने में नहीं थकती थी, आज शांतिप्राप्त आलौकिक तौर पर न होते हूए भी अपने अनगिनत शिष्यों मे समाहित है । जिसमे की मै एक तुच्छ बाला उन्हें गीतो मै सदा महसूस करती हूँ पर शब्दों मे उनकी गरिमा का वर्णन करने मे स्वयं को असमर्थ पाती हूँ । जिस गुरु माँ के साथ मेरे बचपन से ही जो बहुमूल्य छण बीते, वह वृतांत या उनके विचारों के विषय में पाठक के समक्ष प्रस्तुत करने की जो कोशिस करने जा रही हूँ अगर इसमे त्रुटियाँ हो तो मै क्षमा प्रार्थी हूं । यदा में राजभाषा के माध्यम से, जिसकी शैली सही मायने में शास्त्रीय संगीत के सोपान मे लिप्त रहती है, कुछ इस प्रकार वर्णन करने की कोशिश कर रही हूँ:-

अप्पा जी इस गुलदस्ते में,
कुछ पंखुड़ियाँ ऐसी छोड़ गयीं ।

गिरिजा जी इन जेवरों में,
कुछ खनक भी ऐसी छोड़ गयीं ।

देवी जी कुछ बालाओं में,
ध्वनी भी ऐसी छोड़ गयीं ।

सरस्वती माँ उन संगीतमय क्षण में,
हर कविता में कल्पना छोड़ गयीं ।

गुरुमाँ हर शिष्य में इक छवि सी अपनी छोड़ गयीं,
रवि फिर जगता है संगीतमय सूरज फिर उगता है. . .
19 अक्तूबर 2017, दिवाली की उस शाम मेरी उनसे आखिरी मुलाक़ात थी !

भारतवर्ष मे मनाए जाने वाले हर तीज त्योहार मै अप्पा जी एक असीम जिज्ञासा से भाग लेती थीं । 88 साल की होने के बावजूद उनमे 08 वर्ष कि बालिका की सी उमंग भरी रहती थी। कहकहाहट से उनके कोलकाता स्थित आइ॰टी॰सी॰, एस॰आर॰ए॰ के प्रांगंण मे पेहले मंज़िल वाले बंगले मे लोगों का, प्रैस मीडिया, शिष्य, रिश्तेदारों का सुबह से ही ताँता लग जाता था । 'मगही' पान के कोमल पत्ते का एक

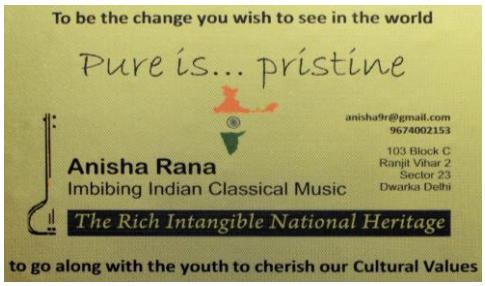

हर देश की शान, उसकी सांस्कृतिक उड़ान

A nation's pride is in its cultural stride

Collegiate: Hindu College, DU

छोटा त्रिकोणाकार टुकढ़ा, हल्के से कत्थे-चूने, नाम मात्र भर सुपारी के साथ उसका स्वाद लेते हुए दरवाजे पर तनिक भी आहाट सुनती तो वह तुरंत अपनी मधुर आवाज में कहतीं *"अरे कौन आया है रे"* ।

उस दीपावली के पूर्व शाम उन्होने फोन पर कह भेजा कि *अनीशा बेटा, क्योंकी तुम्हारे मम्मी पापा दिल्ली गए हूए है और न कोई बुजुर्ग ही वहाँ हैं, और जो तुम अभी बड़ी हो रही हो, सो सुबह से ही यहाँ न आकर अपने घर शाम लक्ष्मी जी का विधिवत दिया अर्पण कर, देर शाम को मेरे पास जरूर आ जाना* । संगीत का रियाज तो हमें कराती ही थीं पर साथ ही हर मोके पर सामाजिक तौर तरीके, धार्मिक रीति रिवाजों को सही ढंग से करने के लिए हमे प्रेरित करती थीं । मंदिर से पूजा का प्रसाद बांटने के बाद मेरे हाथ की बनाई बेसन की बर्फी का चाव से स्वाद लेते हूए इस बात की तारीफ कर रही थीं कि *"वाह, आज के दौर मै भला कोई अपने हाथ से खुद मिठाई बनाता है सब यका यक रैडिमेड खरीद लेते है*। उस समय घर मे केवल उनकी बेटी, उनकी सहायिका और एक और शिष्या थी, हम चहलकदमी के वेग मे पूछ बैठे, आप्पा जी आपने हमे चने की दाल बनाने का इतना सरल तरीका बताया, तो आप हर व्यंजन को इतनी सरलता से और स्वादिष्ट कैसे बना लेती हैं ? वे कहने लगीं, *अरी हर एक गवइए में यह गुण होने चाहिए की जो ताल मेल से गा भी सके व पका भी सके, अरी मैं अगर संगीतमय जीवन व्यतीत न कर रही होती तो शायद एक रसोइया ही होती* । उनकी इतनी सादगीपूर्ण व्यक्तित्व को देख कर हम सब खिलखिला उठे । तत्पश्चात अकस्मात ही अपने बैंगनी रंग के सूटकेस को देख कर कहने लगीं, *अनीशा तुम बारहवीं कि परीक्षा देने जा रही हो, है ना ? हम जयपुर मे यम टी वी इंडिया म्यूजिक समिट के उपलक्ष्य पर प्रसून जोशी जी के साथ गुफ्तगू का कार्यक्रम कर आते हैं, फिर तुम्हें एक सर्टिफिकेट लिख देंगे* । हम दोनों शिष्या अनायास ही बेतुक कह खिलखिला बैठे "आप काहें इतना कार्यक्रम का बोझ लेती हो, आप ना जाओ इस बार हम दोनों हो आते है - जयपुर । न जाने वे दिव्य दृष्टिता से कहने लगीं "*अरी संगीत कि शिक्षा तो जीवन भर का गठबंधन है । हमारा दौर और था फिर भी हम उस समय के बारहवीं पास है, सो तुम दिल्ली विश्वविद्ध्यालय मे एक उच्च कॉलेज मे दाखिला ले कर न केवल प्रोग्राम किया करना बल्की साक्षर तरीके से इस संगीत कि विविधता का प्रचार भी करना* । चूँकी गहन अंधेरे मे पटाखे की आतिशबाज़ी चीरती हुई रोशनी कर रही थी मै घर लौट आई, अनभिज्ञ थी की यह मेरी उनसे आखिरी मूलाकात होगी और उनकी छत्र छाया 24 अक्तूबर सन: 2017 के अंधेरे मे लिप्त हो जायेगी । अगले दिन आइ॰टी॰सी॰, एस॰आर॰ए॰ के सभागार में उनके पार्थिव शरीर के दर्शन करने हेतू दिन भर लोगो का ताँता लगा रहा । कोलकाता के गवर्नर श्री त्रिपाठी जी, एस॰आर॰ए॰ के प्रबन्धक श्री रवी किचलू समेत अनेक गणमान्य हस्तियों ने इस शोकमय वातवारण मे भाग लेकर अप्पा जी को भावपूर्ण श्रद्धांजली अर्पित की और उनके शोक शंतत्तव करीबी रिश्तेदारों और शिष्यों को ढाढ़स बंधाया।

कुछ समयोपरांत राजधानी दिल्ली मै मेरा उचस्तरीय मंच "इंडिया हैबीटेट सैंटर" मे 05 मई 18 को पेहला कार्यक्रम हुआ जिसे दर्शकों ने काफी सराहा तथा अखबार "द हिन्दू" के देश भर मे प्रकाशित प्रपत्र मे एक अभिलेख के माध्यम से इसका उल्लेख किया । अगस्त मे एक श्रेष्ट कॉलेज मे दाखिला भी हो गया तथा अप्पा जी के आशीर्वाद से 20 सितंबर 18 को 'इंडिया इंटर्नेशनल सैंटर', दिल्ली मे मेरा गायन का अगला कार्यक्रम भी निर्धारित हुआ । वह हम सब से विदा ले चुकी थीं पर उनकी दिव्य रौशनी परस्पर हर एक का मार्गदर्शन कर रही है । अभिप्राय केवल यही है कि हो ना हो, सशक्त दैवीय प्रेम की बोली सत्य वचन अजर अमर ही होती है । क्रमश: